P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तराना गायकी के पुरोधा उस्ताद अमीर खाँ

दीपक बादल
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
जानकी देवी बजाज
महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

रौशन भारती
सह आचार्य,
संगीत विभाग
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय संगीत में तराना गायकी को लेकर प्राचीन समय से ही यह अवधारणा चली आ रही थी कि तराने के शब्द अर्थविहीन होते हैं, निरर्थक होते हैं, परन्तु उस्ताद अमीर खाँ ने तराना गायकी पर गहन अध्ययन करके यह पता लगाया कि तराने के बोल अर्थविहीन नहीं हैं। उनका मानना है कि मुस्लिम शासकों के भारत में आने के बाद यह गायकी विकसित हुई तथा इनके बोल फ़ारसी व अरबी भाषा में होते हैं, जो अर्थयुक्त होता हैं। उनके अनुसार तराने का सर्वप्रथम उपयोग अमीर खुसरो ने किया तथा अमीर खुसरो ने अरबी व फ़ारसी में अनेक तरानों का निर्माण भी किया।

अमीर खाँ साहब ने तरानों पर गहन अध्ययन किया और वर्तमान समय में पुराने समय से चली आ रही भ्रांतियों को दूर किया तथा बताया कि तराना अर्थहीन नहीं है। अमीर खुसरो ने अरबी व फारसी शब्दों का प्रयोग करके ही द्रुत रचनाओं का निर्माण किया जो तराना कहलाया।

अमीर खाँ साहब ने अमीर खुसरो के द्वारा बनाए गए अनेक तराने गाए तथा उनके स्वयं के द्वारा भी अनेक तरानों का निर्माण किया गया, जिसका उपयोग वर्तमान समय में किया जा रहा है।

मुख्य शब्द : तराना, ओदानी, नादिरदानी, याला, याली, तोम, दरतन।

प्रस्तावना

भारतीय संगीत अनेक विधाओं से युक्त है, जिसमें गायन, वादन, नृत्य प्रमुख हैं। गायन शैली में भी ख्याल, ध्रुपद, धमार, तराना, चतुरंग, ठुमरी, टप्पा, दादरा आदि प्रकार देखने को मिलते हैं। सबसे पहले भारतीय संगीत में ध्रुपद व धमार का गायन प्रचुर मात्रा में किया जाता था। जैसे–जैसे भारतीय संगीत मुस्लिम शासकों व उनके संगीतज्ञों के सम्पर्क में आया तो भारतीय संगीत में विभिन्नताएँ आई और ख्याल व तराना गायकी का विकास हुआ।

तराना गायकी का विकास भारत में मुस्लिमों के आगमन के बाद माना जाता है, ऐसी मान्यताएँ रही हैं कि मुस्लिमों को यहाँ के संस्कृत के शब्द समझ नहीं आए थे तो उन्होंने नोम तोम के शब्दों को जोड़कर कुछ द्रुत रचनाएँ बनाई, जिनका कोई अर्थ नहीं था।

एक किंवदन्ती के अनुसार अमीर खुसरो व गोपाल नायक में हुई प्रतियोगिता में गोपाल नायक के गायन को सुनकर खुसरो ने फ़ारसी व अरबी के शब्दों को जोड़–तोड़ कर द्रुत रचना बनाई जिसको तराना नाम दिया गया, प्राचीन काल से वर्तमान काल तक यह माना जाता रहा कि तराना अर्थहीन है, परन्तु वर्तमानकाल में उस्ताद अमीर खाँ ने अरबी व फ़ारसी के गहन अध्ययन के बाद यह पता लगाया कि तराने में जिन शब्दों का प्रयोग होता है, वह अर्थहीन नहीं है, वरन् उनका अर्थ होता है।

विश्लेषण

अमीर खाँ साहब ने तराना गायकी पर पुनः अध्ययन या उसको नया जीवन क्यों दिया, इसके बारे में वह लंदन में लिए एक साक्षात्कार में बताते हैं कि उनके घनिष्ठ मित्र जो दिल्ली में निवास करते थे, उनका नाम बिस्मिल सईदी था जो बहुत बड़े शायर थे। जब अमीर खाँ साहब उनसे मिले तो बिस्मिल साहब ने खाँ साहब को एक रूबाई (शायरी) सुनाई, जो अमीर खुसरो साहब की लिखी हुई थी, जिसके बोल थे ''दरा दरा दरतन दरा दरतन दरतन'' तथा इन बोलों को फ़ारसी व अरबी शब्द बताते हुए उनके अर्थ भी बताए कि ''अन्दर आओ, अन्दर आओ, तन के अन्दर आओ''।

(दरा दरा = अन्दर आओ, दरतन = तन के अन्दर आओ)

बिस्मिल सईदी से इस चर्चा के बाद अमीर खाँ साहब ने एक विचार बनाया और तराने पर 20–25 साल तक गहन अध्ययन व खोज की तथा बताया कि तराने के बोल निरर्थक नहीं हैं, उनका मतलब होता है। तराने के कुछ अरबी व फ़ारसी बोल तथा उनका मतलब :–

दर = अन्दर
दरा = अन्दर आओ
दरतन = तन के अन्दर
तनन दरा = तन के अन्दर आओ
ओ दानी = वो जानता है
तो दानी = (ईश्वर) तू जानता है
नादिर दानी = तू सब–कुछ जानता है
तोम = मैं तुम्हारा हूँ
याला = या अल्लाह
याली = या अली
तनादिर दानी = तन के अन्दर भी जानने वाला

अमीर खाँ साहब द्वारा अरबी व फ़ारसी भाषा के अनेक शेरों का उपयोग करते हुए अनेक तरानों का निर्माण किया गया जिनमें से कुछ तराने निम्न हैं :–

राग दरबारी कान्हड़ा–तराना (एकताल)

स्थाई

यारे मन बीआ बीआ
द र त न त दीम त न न त न दीम
तोम त न न न

अंतरा

बे लबम रसीदा जानम
तो बीआ के ज़िंदा मानम
पस अज़ां के मन न मानम
बे चे कार ख़ाही आमद

(बे = को, लबम = होठों, रसीद = पहुँचना, जानम = मेरी ज़िंदगी, तो = तू, बिया = आ जा, के = कि, ज़िंदा = ज़िंदा, मानम = रह जाऊँ, पस = बाद, अज़ आँ = उस के, मन = मैं, न = न, बे = किस, चे = लिए, कार = काम, ख़ाही = गा, आमद = आए)

मेरी ज़िंदगी (सांस) होठों पर पहुँच गई है। (ए मेरे महबूब) तू आ जा कि मैं ज़िंदा रह जाऊँ। उसके बाद कि जब मैं न रहूँ, तू किस काम के लिए आएगा (अर्थात् तब तू आएगा भी तो क्या फ़ायदा)।

राग हंसध्वनि–तराना (तीनताल)

स्थाई

ता नोम तनन तदीम तदेरे दानी, ता नोम तनन तदीम तदेरे दानी।
तद्रे दानी तननन यली यल ललल

अंतरा

इत्तिहादेस्त मियां ने मनो तो मनो तो नेस्तमियां ने मनो तो

(इत्तिहादेस्त = मिलना/जोड़ना/ताल्लुक, मियांने = दरमियान में, मनो तो = मेरे–तेरे, नीस्त = नहीं है)

तेरे और मेरे दरमियान में एक ऐसा ताल्लुक है कि तेरे मेरे बीच मैं और तू का फ़र्क नहीं रह गया। (मैंने तेरा इतना नाम लिया, इतनी पूजा की कि मैं और तू एक हो गए)।

राग जोग–तराना (तीनताल)

स्थाई

न दिर दिर दीम तोम त दे रे न त दा नी
न दिर दिर दीम तोम त दे रे न त न देरे न
त न देरे न तदीम तदीम ओ दानी ता नों त ता
नों त न न न न
ना दिर दिर

अंतरा

बसस्त ईंन क़ीमते खुसरो के गूई
गुलामे राएगानी रा इन चिनीन अस्त।।

बसस्त = काफ़ी है, इन = ये , क़ीमते = दाम, खुसरो = खुसरो, के गुई = जो तू कह रहा है, गुलामे = गुलाम, राएगानी = मुफ़्त, रा = को, इन = ऐसा, चिनीन अस्त = ही (होता) है।

खुसरो कहते हैं कि जो दाम तू कह रहा है वह काफ़ी है। मुफ़्त के गुलाम के साथ तो ऐसा ही (होता) है।

उपर्युक्त तरानों में त न न न न शब्दों की पुनरूक्ति है जिससे जाप का भाव उत्पन्न होता है, यह उसी प्रकार है जैसे जब किसी वैष्णव की लिव लगती है तो वह जाप करने लगता है और नृत्य करने लगता है। इसी तरह तराने में भी जाप के माध्यम से सूफ़ीयाना भाव उत्पन्न होता है।

तराना गायकी के बारे में अमीर खाँ साहब बताते हैं कि यह एक प्रकार का जाप है, जिसमें शब्दों की पुनरावृत्ति होती है। वह बताते हैं कि अमीर खुसरो के समय छः प्रकार की गायन शैलीयाँ – कोल, कल्बाना, नफ़्ज, गुल, तराना, ख्याल थी। तराना इनमें से एक है।

तराने के बोल ही सितार के बोल हैं तथा दक्षिण भारत में गाए जाने वाला ''तिल्लाना'' भी उत्तरी भारतीय तराने से उत्पन्न हुआ हैं। अमीर खाँ साहब के तरानों में एक विशेषता है कि इनके अन्तरे में अरबी व फ़ारसी भाषा के शेर भी सुनने को मिलते हैं।

साहित्यावलोकन

उस्ताद अमीर खाँ साहब द्वारा तराना गायकी पर किए गए अनुसंधान पर पहले भी कई शोधकर्ताओं द्वारा शोध किया जा चुका है। उनके द्वारा किए गए शोध का साहित्य अवलोकन इस भाग में प्रस्तुत किया गया है।

1. तेजपाल सिंह (2005) और प्रेरणा अरोड़ा (2005), इन्होंने अपने लेख में उस्ताद अमीर खाँ द्वारा तराना गायकी पर प्रस्तुत किए गए नवाचारों पर प्रकाश डाला है। इन्होंने बताया कि तराना गायकी की उत्पत्ति, विकास व उनके बोल तथा उनके अर्थों पर प्रकाश डाला है। इसके साथ ही उस्ताद अमीर खाँ द्वारा रचित कुछ तरानों पर भी प्रकाश डाला है।
2. डॉ0 इब्राहिम अली (2011) इन्होंने अपने लेख में उस्ताद अमीर खाँ के द्वारा रचित तरानों के बारे में लिखा है तथा प्रत्येक राग के तराने व उनका अर्थ सरगम सहित लिखने का प्रयास किया है।
3. पं0 अमरनाथ (2008) इन्होंने उस्ताद अमीर गायकी में प्रयुक्त होने वाले शब्दों (अरबी, फ़ारसी) के शब्द अर्थों पर प्रकाश डाला है तथा अपने लेख अमीर खाँ साहब द्वारा बनाए गए अरबी व फ़ारसी के कुछ तरानों का भी अर्थपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया है।
4. अजीत सिंह पेंतल (1996) इन्होंने अपने लेख भारतीय संगीत में तराना गायकी की उत्पत्ति पर प्रकाश डाला तथा उस्ताद अमीर खाँ साहब द्वारा तराने पर किए

गए नए प्रयोगों तथा जानकारी को अपने लेख में प्रस्तुत किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य है कि प्राचीन समय से वर्तमान समय तक यह माना जा रहा है कि तराना अर्थहीन है, परन्तु अमीर खाँ साहब ने अमीर ख़ुसरो के समय प्रयोग किए गए अरबी फ़ारसी शब्दों को समझकर उनका गहन अध्ययन करके यह पता लगाया कि तराना अर्थहीन नहीं है। पुराने समय में संगीतज्ञों को अरबी व फ़ारसी भाषा की जानकारी नहीं होने के कारण उन्होंने तराने में धा–धिन–किड–धा–तक–धुम जैसे निरर्थक शब्दों को जोड़ दिया, तभी से यह माना जा रहा था कि तराना अर्थहीन होता है।

इस शोध–पत्र में शोधार्थी यह बताना चाहता है कि तराने को अर्थहीन न समझकर उनका अभिप्राय अर्थ से लिया जाए तथा उसको जाप का एक तरीका बताकर संगीत को साधना से जोड़ा जा सकता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त लेख तराना गायकी व उसकी लेखन शैली के सम्बन्ध में एक संक्षिप्त विवरण है। उपर्युक्त लेख में जहाँ एक ओर तराना गायकी को अर्थयुक्त बताया गया है, वहीं दूसरी ओर उनके फ़ारसी व अरबी शब्दों के अर्थ भी समझाए गए तथा वर्तमान में तराना गायकी के विकास पर भी प्रकाश डाला गया है।

तराना गायकी में इस अनुसंधान को संगीत के विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाना चाहिए तथा अभी भी बहुत–सी पुस्तकों में तराना गायकी को अर्थहीन लिखा गया है, इसे बदलकर विद्यार्थियों तक ही जानकारी पहुँचायी जानी चाहिए।

संगीत में कलाकारों व श्रोताओं के लिए यह तराना गायकी में जो नया अनुसंधान सामने आया है, यह बहुत ही महत्वपूर्ण है।

अतः उस्ताद अमीर खाँ साहब के समय व उनके बाद के समय को तराना गायकी के पुनर्जन्म का समय कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सिंह तेजपाल, अरोड़ा प्रेरणा, (2005), "संगीत के देदीप्यमान सूर्य उस्ताद अमीर खाँ : जीवन एवं रचनाएँ" ISBN : 978–81–7391–718–3 कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, पेज न. 198

अली इब्राहिम, (2011), "USTAD AMIR KHAN : Life and Contribution to Indian Classical Music", ISBN: 3843389004, LAP LAMBERT Academic Publishing.

गर्ग, लक्ष्मीनारायण (1969), "हमारे संगीत के रत्न", संगीत कार्यालय हाथरस, इलाहाबाद

पं. अमरनाथ (2008), "इन्दौर घराने के मसीहा", पं. अमरनाथ मेमोरियल फाउण्डेशन, नई दिल्ली

पं. अमरनाथ (1989), "Living Idioms in Hindustani Music", विकास पब्लिक हाउस, नोएडा, उत्तर प्रदेश

आचार्य बृहस्पति, (1976), "संगीत चिंतामणी", संगीत कार्यालय हाथरस, इलाहाबाद

https://youtu.be/Co21VCOYWbE
https://youtu.be/Ha+N+gCUA–0
https://youtu.be/SRBEZxrrThl